चारुचन्द्र की कविताएँ

(1)
पाट दो इस दलदल को

बहुत जी चुके तुम खुद के लिए
पर क्या मिला?
भूख !
बेरोजगारी !
और, दुर्गन्ध भरे दलदल में धंसी जिन्दगी !
जिसमें तुम खुद के ही भार से धंसे जा रहो हो !
लेकिन, अगर तुम चाहते हो कि आने वाली जिन्दगियां
इस दलदल में न सड़ें
तो पाट दो इस दलदल को अपनी जिन्दगियों से
और बनाओ दुर्गन्ध रहित उर्वर भूमि
जिसमें चैन की सांस ले सकें
तुम्हारी अगली पीढ़ियां !!

(2)
उनका अन्त, हमारी शुरुआत

वे अपने अंतिम गीत गा रहे हैं; बेमन से,
हमें गढ़ने हैं नये सुन्दर गीत अभी
वे अपनी अंतिम हंसी हंस रहे हैं; खांसते हुए,
हमारी हंसी की खनखनाहट गूंजनी है अभी
वे अपने टूटते दृश्यों में खोये हैं; थके से
हमें अपने खूबसूरत दृश्य बनाने हैं अभी,
वे अपनी अंतिम सांसे ले रहे हैं; बारूद की गंध में
हमें ताजी करनी हैं हवाएं अभी,
तो देर किस बात की
गढ़ो नये गीत, जो गाये जा सकें,
हंसो इतना खुलकर, कि थम जाए उनकी हंसी
बनाओ ऐसे खूबसूरत दृश्य, जो देख सकें सभी
ताजी हवा को आने दो, ताकि चलने लगें सांसे
फिर से !!

(3)
फिर एक नई शुरुआत

विचारों का लम्बा सफर
रास्तों की कठिनाइयां
सपनों की धुंधली तस्वीर,
प्रयोगों के परिणाम !
इन्हें सोचकर, इन्हें देखकर
जहां पर महसूस होने लगे कमजोरी
वहां से करो, फिर एक नई शुरुआत !
एक के बाद एक शुरुआत
एक मोड़ के बाद दूसरा मोड़
एक विचार से जुड़ा दूसरा सही विचार
अपनाओ !
तुम्हें मिलेगा हर जगह, एक नया ऊर्जास्रोत
जो करेगा तुम्हारे इरादे मजबूत
जो देगा तुम्हें एक नई ताजगी
फिर से चल पड़ने की !
फिर से संघर्ष करने की !
फिर से एक नई, तेज पैनी नजर
ताकि उस सपने के हकीकत में
बदल रहे एक-एक कण को, देखो तुम स्पष्ट !
और वहीं से होगी फिर एक नई शुरुआत !!

(4)
गलियों में बहते लोहू का सवाल

मेरे दिमाग में है लड़ाई, और विचार
मेरे दिमाग में है 'नेरूदा'
तो फिर कैसे करूं पेड़ों और फूलों की बात ?
तुम्हीं बताओ कैसे ?

उठो ! संग्रामियों जागो !! नयी शुरुआत करने का समय फिर आ रहा है !!!